माया है बड़ी धोखेबाज तुड़वा देती हर प्रतिज्ञा
दिल लगवाकर देहधारी से करवाती है अवज्ञा
आत्मिक गुण चुराने वाली ठगनी बड़ी है माया
माया के वश होकर सबने अपार दुःख है पाया
हमारी बुद्धि जब किसी देहधारी में फंस जाती
है
हमसे भूल कराकर पाप के दलदल में धँस
जाती है
कामचिता में जलाकर हमें काला कंगाल बनाती
है
बुद्धि अशुद्ध बनाकर भयंकर बवाल मचाती है
विकारों में पड़कर आत्मा हुई कमजोर निढ़ाल
शक्तिहीन आत्मा कैसे करेगी अपनी सम्भाल
आया है इस धरा पर कालों का काल महाकाल
आई है चारों और से परिस्थितियां बड़ी
विशाल
परीक्षा लेने आई प्रकृति धरकर रूप विकराल
प्रकृतिजीत बनना है तो बनो मास्टर महाकाल
जरा सा देह अभिमान आया तो खिला देगा हार

बाहिर्मुखता को छोड़ो बन जाओ अब बिंदू सार
अपनी बुद्धि से पहचान लो माया की हर सूरत
बनते जाओ कलयुगी संस्कारों की संहारी मूरत
बनाते जाओ खुद को मास्टर मर्यादा पुरुषोत्तम
ईश्वरीय मर्यादा में रहकर पद पा लो सर्वोत्तम
तेज करो व्यर्थ संकल्पों के विनाश की ज्वाला
रोज पीते रहो मुरली रूपी ज्ञानामृत का प्याला
भरते जाओ अपने भीतर ज्ञान योग का उजाला
बन्द करो पीना विकारों रूपी जहर का प्याला
धर्म राज खुद ही तुम्हारे विकर्म तुम्हे बताएगा
क्या होगी विकर्मों की सजा ये तुम्हें दिखाएगा
विकार चले जायेंगे तेरा ईश्वरीय जीवन
उजाड़कर
विकर्मों के दाग रुलायेंगे तुम्हें गला फाड़
फाड़कर
अब घर जाना है बनाओ अपनी अवस्था
उपराम
देहि अभिमानी बनकर रहो सुबह हो या शाम
बाबा के बन गए हो तो कोई मर्यादा ना तोड़ो

अपने दिल का रिश्ता एक शिव बाबा से जोड़ो
ॐ शांति